KU Newsletter

April 2025/ Edition 1, Vol. 1, चैत्र मास, विक्रम संवत २०८२

www.kuk.ac.in

मन्थन विकसित भारत पर : कुवि होगा मेजबान – कुलपति

कुरुक्षेत्र। हरियाणा प्रदेश का कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र आगामी 24 अप्रैल को एक ऐतिहासिक आयोजन की मेजबानी करने जा रहा है। विकसित भारत मिशन 2047 पर आयोजित इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति विचार–विमर्श करेंगे और देश के विकास में उच्च शिक्षा की भूमिका पर चर्चा करेंगे। इस सम्मेलन में विकसित भारत के निर्माण में उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका और जिम्मेदारी पर विशेष जोर दिया जाएगा। साथ ही, मिशन 2047 के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए रणनीतियों और कार्य योजनाओं पर भी गहन चर्चा होगी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में स्वदेशी शोध संस्थान, नई दिल्ली, नैक द्वारा ए–प्लस–प्लस ग्रेड प्राप्त कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार, इंडियन कांउसिल आफ एग्रीकल्चर रिसर्च, नई दिल्ली, यूनिवर्सिटी ऑफ अगदर, नार्वे, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक तथा आर्गेनाइजर मैगजीन, मीडिया पार्टनर के संयुक्त तत्वावधान में "विजन 2047: समृद्ध और महान् भारत" विशय पर 24–26 अप्रैल, 2025 को तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हाइब्रिड मोड में किया जाएगा। इस तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक प्रो. सुषील शर्मा एवं प्रो. अनिल मित्तल ने बताया कि सम्मेलन की मुख्य आयोजन समिति में मुख्य सलाहकार निदेशक भारतीय रिजर्व बैंक श्री स्वामीनाथन गुरुमूर्ति, जो. हो कॉर्पोरेशन के सीईओ श्री श्रीधर वेम्बू, अध्यक्ष, यूनेस्को–एमजीआईईपी प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा, नीति आयोग के पूर्व सदस्य डॉ. राजीव कुमार, आईसीएआर नई दिल्ली के डायरेक्टर जनरल डॉ. हिमांशु पाठक, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज होंगे। इस अवसर पर लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया ने बताया कि मीडिया मैनेमेंट आर्गेनाइजर सलाहकार वीकली के एडिटर प्रफुल्ल केतकर, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग सलाहकार स्मार्ट ग्रिड एंड रिनुएवेबल एनर्जी यूनिवर्सिटी ऑफ अगदर नार्वे से प्रो. मोहन लाल कोल्हे तथा कृषि गतिविधियों के सलाहकार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के रिसर्च निदेशक डॉ. राजेश गर्ग होंगे। जेएनयू दिल्ली से प्रो. प्रदीप चौहान, यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली से डॉ. सरबजीत कौर, आ. इसीएआर से प्रिंसीपल सांइटिस्ट डॉ. सत्यप्रिया व

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार से डॉ. अनिल वत्स सम्मेलन के संयोजक होंगे। उन्होंने बताया कि इस तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए देश–विदेशों के शोध विद्वानों के शोध पत्र आमंत्रित किए हैं। इस बारे आप अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की वेबसाइट https://swadeshishodh-org and https://mybharat2047-com से प्राप्त कर सकते हैं।

विद्यार्थियों की रचनात्मकता को नये आयाम देगा न्यूज लेटर : राज्यपाल

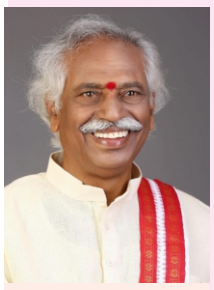

बंडारू दत्तात्रेय
राज्यपाल, हरियाणा

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा विद्यार्थियों में संचार कौशल विकास हेतु न्यूज लेटर का प्रकाशन किया जा रहा है। यह एक शानदार पहल है, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों में संचार कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए इस न्यूज लेटर के प्रकाशन का आरंभ कर रहा है, जो बेहद सराहनीय है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मकता और प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर मिलेगा। विद्यार्थियों की प्रतिभा को तराशने वाले इस उपक्रम के लिए मैं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा व उनकी पूरी टीम के सा. थ–साथ सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूं। न्यूज लेटर के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभ. कामनाएं करता हूं''।

छात्रों में संचार कौशल का विकास करेगा न्यूज लेटर : मुख्यमंत्री

नायब सिंह सैनी
मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा विद्यार्थियों में संचार कौशल विकास हेतु न्यूज लेटर का प्रकाशन किया जा रहा है। देश में सबसे पहले कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय व इससे सम्बन्धित महाविद्यालयों में सभी प्रावधानों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को लागू किया गया है। यह प्रतिष्ठित संस्थान विद्यार्थियों की मौलिकता को उद्घाटित करने के व्यावहारिक प्रयास निरतंर और द्रुत गति से कर रहा है। आशा है कि न्यूज लैटर का प्रकाशन पत्रकारिता के प्रत्येक क्षेत्र में उच्च मानदंड स्थापित करते हुए क्षेत्र और समाज के सभी वर्गों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर किया जाएगा। मैं न्यूज लेटर के सफल प्रकाशन हेतु मेरी अनंत शुभकामनाएं ।

नूतन प्रयासों क्रम में नया कदम न्यूज लेटर : कुलपति

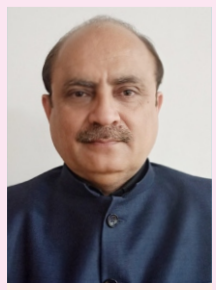

प्रो.सोमनाथ सचदेवा
कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

किसी भी विश्वविद्यालय पर एक बड़ा दायित्व होता है कि उसे समय की जरूरतों के अनुरूप खुद को नया बनाना होता है। कालखंड अनुसार नवीनतम प्राप्त करके ही वह देश और समाज में अपना योगदान दे पाता है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय अपने इस दायित्व को बखूबी समझता रहा है, वह पठन–पाठन को दुनिया के बदलावों की अपेक्षाओं की कसौटी पर खरा उतारने की यात्रा पर निर्बाध गति से आगे बढ़ रहा है। एनईपी –2020 को इसके सभी प्रावधानों के साथ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने पूरे देश में सर्वप्रथम लागू किया है। जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान जो उत्तर भारत में अपनी अलग पहचान रखता है के संपादकीय नेतृत्व में प्रकाशित इस न्यूज लेटर के इस अंक को पाठकों को सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

जनसंचार के छात्रों को नये आयाम देगा न्यूज लेटर : कुलसचिव

ले. (डॉ.) वीरेन्द्र पाल
कुलसचिव, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा विद्यार्थियों में संचार कौशल विकास हेतु न्यूज लेटर का प्रकाशन किया जा रहा है। यह एक शानदार पहल है, जो विश्वविद्यालय में जनसंचार को बढ़ावा देने में मदद करेगी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों में संचार कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए इस न्यूज लेटर के प्रकाशन का आरंभ कर रहा है। यह न्यूज लेटर विश्वविद्यालय की प्रगति को लोगों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाएगा। मुझे विश्वास है कि यह न्यूज लेटर विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्ष . कों और कर्मचारियों के बीच संचार को बढ़ावा देगा 'न्यूज लेटर' के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कुवि ने संस्कृति सरक्षंण के क्षेत्र में स्थापित किए नये प्रतिमान

प्रो. महा सिंह पुनिया
निदेशक
आईएमसीएंडएमटी, कुवि

कुरुक्षेत्र।
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र ने संस्कृति संरक्षण के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय सदैव हरियाणवी संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की अलग पहचान है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का धरोहर हरियाणा संग्रहालय ऐतिहासिक एवं अद्वितीय है जो संस्कृति संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। संग्रहालय के माध्यम से कुवि हरियाणा लोक कला एवं पारंपरिक संस्कृति को दुनिया के हर कोने में प्रचार एवं प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक यह संग. हालय आने वाली पीढ़ियों के लिए हरियाणवी संस्कृति के गौरवमयी इतिहास से जुड़ने एवं जानने का अहम कार्य करेगा। समाज में विकृतियां बढ़ रही हैं ऐसे में नैतिक एवं मानव जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए ऐसे सांस्कृतिक संस्थानों की स्थापना करना आवश्यक है अभी हाल ही में कुवि ने एमिटी यूनिवर्सिटी नोएडा यूपी में आयोजित 38वें अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय राष्ट्रीय युवा महोत्सव में ओवर ऑल तीसरा स्थान हासिल किया। इस प्रतियोगिता में भारत के अलग. अलग राज्यों के 130 विश्वविद्यालय ने भाग लिया था। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की टीम ने थियेटर में ओवर ऑल दूसरा प्रोसेशन एवं हरियाणवी लोक नृत्य दूसरा हिंदी नाटक में द्वितीय हास्य नाटिका में प्रथमए मूक अभिनय में विश्वविद्यालय की टीम ने पहला स्थान हासिल किया। फोक आर्केस्ट्रा में विश्वविद्यालय की टीम प्रथम एवं क्ले माडलिंग में द्वितीय एवं कोलॉज में तृतीय रंगोली में प्रथम तथा डिबेट में चौथे स्थान पर रही।

रत्नावली महोत्सव पूरे विश्व में हरियाणवी संस्कृति का परचम लहरा रहा है। संस्कृति के इस महाकुंभ में राज्य स्तरीय रत्नावली महोत्सव में 34 विधाओं में 3000 से अधिक कलाकार अपनी भागेदारी सुनिश्चित कर रहे हैं।

इस महोत्सव में युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति से दूर हटकर हरियाणवी संस्कृति को आगे बढ़ा रही है। कुवि ने रत्नावली के माध्यम से लूर नृत्य गायन शैलियां लोक विनोद पगड़ी रागनी हरियाणवी नाटक रसिया हरियाणवी आर्केस्ट्रा आदि कलाओं को संरक्षित करने का कार्य किया है।

इस महोत्सव के माध्यम से युवा पीढ़ी हरियाणवी संस्कृति को सहेजने का काम भी कर रही है। हरियाणा में लुप्त हो चले 'लूर' नृत्य को रत्नावली महोत्सव में शामिल कर लूर नृत्य को जीवन्त किया गया है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र परिवार हरियाणा संस्कृति के संरक्षण के लिए दृढ़ संकल्प रखता है।

यूआईईटी संस्थान द्वारा कुवि में आयोजित 'विज्ञान, आधुनिक शिक्षा व जीवन प्रबंधन' विषय स्वामी ज्ञानानंद ने विद्यार्थियों से किया संवाद

गीता की शिक्षा आज की आवश्यकताओं के अनुरूप

गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा कि भारतीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा के स्वरूप का दूसरा नाम नाम जीवन का सर्वांगीण विकास है। यहीं से शिक्षा के साथ जीवन प्रबंधन भी जुड़ा हुआ है। यदि जीवन में धन कमा लिया लेकिन मन, स्वास्थ्य ही ठीक नहीं है व्यर्थ है। उन्होंने कहा कि जीवन के उत्थान के लिए सत्संग जरूरी है। इसके साथ ही पूज्य स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज ने युवाओं की जीवन की शंकाओं एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया।

कुरुक्षेत्र।

गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा है कि जीवन प्रबंधन की समग्र शिक्षा का सार गीता में समाहित है। गीता की शिक्षा आज के आवश्यकताओं के अनुरूप है। जो मनुष्य की बुद्धि को सचेत बनाये रखती है और बताती है क्या करना है क्या नहीं। उसमें जो भेद बताए वही गीता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चों को मानसिक रूप से मजबूत करने के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप श्रीमद्भ. गवद्गीता को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

कुवि के श्रीमद्भगवद्गीता केवल एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं बल्कि इसमें मानव जीवन की समस्याओ का समाधान मिलता हैं। यह उद्गार पूज्य स्वामी ज्ञानानंद महा. राज ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के ऑडि. टोरियम हॉल में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा के संरक्षण में यूआईईटी संस्थान द्वारा श्रीम. द्भगद्गीताः विज्ञान, आधुनिक शिक्षा व जीवन

प्रबंधन विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर बतौर मुख्यातिथि व्यक्त किए।

इस अवसर पर कुवि कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने गीता मनीषी पूज्य स्वामी ज्ञानानंद महाराज को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। पूज्य स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा कि गीता भारत का ही नहीं अपितु पूरे विश्व का गौरव है। यह ग्रंथ केवल हिन्दुओं के लिए हि नहीं अपितु पूरी विश्व की मानवता के लिए है। उन्होंने कहा कि गीता में अर्जुन विश्व के हर उस युवक का प्रतिनिधित्व करता है जो कहीं न कहीं मानसिक रूप से बाधित है। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भगवदगीता में मनुष्य की वर्तमान समस्याओं का समाधान निहित है। यदि हर शिक्षक, प्रोफेसर पवित्र ग्रंथ गीता की सोच को अपनाकर शिक्षा दे तो निश्चित ही शिक्षा क्षेत्र में अद्भुत, सकारात्मक, रचनात्मक क्रांति का संचार होगा।

उन्होंने तीन 'ए' के बारे में कहा कि यदि मनुष्य जीवन में अपने कर्म के प्रति एक्टिव, अलर्ट एवं अवेयर रहेंगे तो एकाग्रता को प्राप्त कर जीवन में अवश्य सफलता प्राप्त कर सकते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता ग्रंथ को आत्सात करने से ही विद्यार्थियों में एकाग्रता, आत्मविश्वास जागृत होगा जो उनकी स्मरण शक्ति को भी मजबूत करेगा। गीता मनुष्य के अंदर छुपी हुई क्षमताओं का विकास करती है तथा मन को एकाग्र करती है। यह हमें जीवन में समय प्रबंधन भी सीखाती है, तथा भविष्य की चिंता न करने व वर्तमान को संभालने का संदेश भी देती है। गीता का भक्ति योग मन को एकाग्र करने के लिए है।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एवं गीता संस्थान मिलकर करेगा पाठ्यकम आंरभ

कुवि गीता पर करेगा बी.ए. (गीता स्टडीज) पाठ्यक्रम आरम्भ : कुलपति

कुरुक्षेत्र। यूआईईटी संस्थान द्वारा श्रीमद्भगद्गीताः विज्ञान, आधु. निक शिक्षा व जीवन प्रबंधन विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए कुवि कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि गीता के दिव्य ज्ञान को शोध, पाठ्यक्रम एवं संवादों के माध्यम से शिक्षा के हर स्तर पर पहुंचने की आवश्यकता है ताकि अगली पीढ़ी तकनीकी के साथ आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध हो। उन्होंने कहा कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय जल्द ही बीए गीता स्टडीज प्रोग्राम को गीता संस्थान के साथ शुरू करेगा तथा भविष्य में पीजी एवं पीएचडी के स्तर पर भी ले जाया जाएगा। उन्होंने कहा कि केयू ने वेल्यू एडिड कोर्स के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप गीता ज्ञान संस्थान के साथ एमओयू भी किया है। कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने गीता मनीषी पूज्य स्वामी ज्ञानानंद जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि विज्ञान, आधुनिक शिक्षा एवं जीवन प्रबंधन जैसे गूढ़ विषयों पर पूज्य स्वामी की अमृतवाणी हृदय को छू गई चिंतन को भी एक नई दिशा प्रदान कर गई। उन्होंने कहा गीता धार्मिक ग्रंथ हीं नहीं बल्कि जीवन जीने का शास्त्र एवं जीवंत मार्गदर्शन है। शिक्षा का अर्थ केवल सूचना का संचय ही नहीं बल्कि बुद्धि एवं विवेक का विकास है। वर्तमान में जब युवा पीढ़ी मानसिक तनाव एवं निर्णय असमर्थता से जूझ रहीं हैं तब गीता का निष्काम कर्म का संदेश उन्हें संयम एवं धैर्य की ओर अग्रसर करता है। कार्यशाला के संरक्षक एवं युआ. ईईटी निदेशक प्रो. सुनील ढींगरा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। वहीं कार्यशाला के संयोजक डॉ. राजेश अग्निहोत्री ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया तथा डॉ. उर्मिला ने मंच का संचालन किया। इस अवसर पर डॉ. ममता सचदेवा, कुवि कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल, केडीबी के मानद सचिव उपेन्द्र सिंघल, 48 कोर्स तीर्थ समिति के अध्यक्ष मदन मोहन छाबड़ा, केडीबी सदस्य विजय नरूला, निदेशक प्रो. सुनील ढींगरा, डीन प्रो. ब्रजेश साहनी, प्रो. कृष्णा देवी, प्रो. अनिल गुप्ता, लोक सम्पर्क विभाग के निदेशक प्रो. महासिंह पूनिया,

उपनिदेशक डॉ. जिम्मी शर्मा, डॉ. ऋषिप. ाल मथाना, अशोक रोशा, डॉ. एमके मोद. गिल, डॉ. पवन दीवान, डॉ. प्रियंका जांग. ड़ा, डॉ. उर्मिला, डॉ. सविता गिल, सहित केयू डीन, निदेशक, विद्यार्थी मौजूद रहे

महात्मा ज्योतिबा फुले चेयर, इतिहास विभाग द्वारा सत्य धर्म की ओर ज्योतिराव फुले पर दो दिवसीय संगोष्ठी

ज्योति राव फुले एक महान समाज सुधारक थे : कुलपति

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के महात्मा ज्योतिबा फुले चेयर, इतिहास विभाग द्वारा सत्य धर्म की ओर ज्योतिराव फुले, उनके सुधार आंदोलने और विरासत का मूल्यांकन विषय पर भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 7 व 8 अप्रैल को किया गया। पहले दिन कार्यक्रम की अध्यक्षता करत हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि ज्योतिबा फुले भारत में सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। वे एक महान समाज सुधारक थे, जिन्होंने जाति व्यवस्था,

महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा के लिए संघर्ष किया। उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना की उनकी विरासत के रूप में में जातिगत भेदभाव के खिलाफ लड़ाई, महिलाआ. ं के सशक्तिकरण और हाशिए पर पड़े लोगों तक शिक्षा के प्रसार में कई योगदान शामिल हैं। इतिहास विभाग के अध्यक्ष एवं महात्मा ज्योतिबा फुले चेयर के प्रभारी प्रोफेसर एस.के. चहल ने सभी अतिथियों का स्वागत किया व संगोष्ठी के बारे में विस्. तार से बताया। इस अवसर पर संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अध्यक्ष व एमरेटस पद्मश्री प्रो. रघुवेंद्र तंवर ने कहा कि इतिहासकारों ने ज्योतिराव फुले को स्थान नहीं दिया।

ज्योतिबा फुले के समतामूलक और समावेशी समाज के दृष्टिकोण ने भारत में कई सामाजिक सुधार आंदोलनों की नींव रखी। उनके कार्यों ने डॉ. बी.आर. अंबेडकर सहित कई समाज सुधारकों को प्रेरित किया और आधुनिक भारत की सामाजिक न्याय और समानता के प्रति प्रतिबद्धता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता औरंगाबाद के प्रोफेसर उमेश बागडे, ने कहा कि ज्योतिबा फुले ने समाज को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर निचली जातियों के लोगों को समान अधिकार दिलाने के लिए सत्यशोधक समाज का गठन किया। संगोष्ठी के गेस्ट आफ आनर रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता के प्रो. हितेन्द्र पटेल ने कहा कि ज्योतिबा फुले का महान काम सामाजिक न्याय, सर्व समाज को एकजुट करने का था।

70 से अधिक शोध–पत्र प्रस्तुत किए गए

इतिहास विभाग के अध्यक्ष एवं महात्मा ज्योतिबा फुले चेयर के प्रभारी प्रोफेसर एस.के. चहल ने कहा कि इस दो दिवसीय संगोष्ठी में दूसरे दिन विश्वनाथ शिंदे, पूर्व निदेशक, महात्मा जोतिबा फुले चेयर, सावित्रीबाई फुले पुणे यूनिवर्सिटी, मुख्य अतिथि और प्रोफेसर विक्टर बाबू, इतिहास विभाग, बीबीएयू, लखनऊ सम्मानित अतिथि रहे। उन्होंने बताया कि प्रो.अर्चना मलिक–गौरे, दर्शनशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, सम्मानित अतिथि होंगी तथा प्रो. सुभाष चंद्र सैनी, हिंदी विभाग, समापन सत्र की अध्यक्षता करेंगे। संगोष्ठी में विभिन्न सत्रों में प्रतिभागियों द्वारा ज्यो. तिबा फुले के जीवन दर्शन, समाज सुधार, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक उत्थान, वंचित वर्ग, शिक्षा उत्थान आदि विषयों पर 70 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

गैर–सर्जिकल कैंसर उपचार पर संयुक्त शोध के लिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को मिला पेटेंट

शोध के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण कार्य के लिए कटिबद्ध : प्रो. सोमनाथ

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के रसायन विज्ञान विभाग के प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा और जूलॉजी विभाग के शिक्षक डॉ. जितेंद्र भारद्वाज को गैर–सर्जिकल कैंसर उपचार "एपोप्टोसिस इंड्यूसिंग कम्पोजीशन कॉम्प्रिजिंग ट्रायजोलोथियाजोलिल–ट्राई. जोल डेरिवेटिव ऑफ बेन्जेन्सल्फोनामाइड" नामक एक पेटेंट 19 अप्रैल को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को प्रदान किया गया।

इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने अनुसंधान समूह को बधाई देते हुए कहा कि हमने अनुसंधानकर्ताओं को प्रो. त्साहन, शोधकर्ताओं को सम्मानित करने, पेटेंट विशेषज्ञ के माध्यम से पेटेंट दाखिल करने की सुविधा, प्रोजेक्ट फाइलिंग के लिए सिंगल विंडो एक्सप्रेस अनुमोदन, केयू में अनुसंधान को बढ़ावा देने, इन्क्यूबेशन, स्टार्ट अप और इनोवेशन सेंटर और शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई सकारात्मक कदम उठाए गए हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय शोध के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण कार्य के लिए व शोध को उच्च स्तर तक ले जाने के लिए कटिबद्ध है। शिक्षकों को बेहतर शोध कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि शोध के क्षेत्र में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय भी देश–विदेश के बेहतर विश्वविद्यालयों के साथ शोध की गुणवत्ता के सभी मापदंडों पर खरा उतर सके।

प्रो. पवन शर्मा

डॉ. जितेंद्र भारद्वाज

इस अवसर पर प्रो. पवन शर्मा एवं डॉ. जितेन्द्र भारद्वाज ने बताया कि वर्तमान आविष्कार कैंसर के उपचार के लिए एपोप्टोसिस उत्प्रेरण रचना से संबंधित है। कैंसर से जुड़े प्रमुख मुद्दों में से एक बेकाबू सेल प्रसार के दौरान हाइपोक्सिया की स्थिति का विकास है जिसे ट्यूमर की प्रगति के प्रमुख चालकों के रूप में माना जाता है। ट्यूमर कोशिकाएं ट्यूमर सेल की प्रगति के दौरान हाइपोक्सिक स्थितियों को कम कैसपेस फंक्शन, तथा विभिन्न तंत्रों का उपयोग करके अनुकूलित करती हैं, इस प्रकार क्रमादेशित कोशिका कैंसर से होने वाली मृत्यु को रोकती हैं।

एपोप्टोसिस कोशिका मृत्यु का पहला पह. चाना जाने वाला मार्ग है जिसमें विभिन्न इंट्रासेल्युलर के साथ–साथ बाह्य संकेतन मार्ग द्वारा नियंत्रित गैर–लिटिक प्रकार क्रमादेशित कोशिका मृत्यु शामिल है।

गैर–सर्जिकल, गैर–विशिष्ट और प्रतिरक्षात्मक रूप से मौन होने के कारण, एपोप्टोसिस आणविक रूप से नियंत्रित कोशिका मृत्यु के लिए उपयोगी विधि का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, शक्तिशाली एपोप्टोसिस प्रेरण प्रभावकारिता के साथ संपन्न नवीन कार्बनिक अणुओं के विकास को कैंसर के उपचार के लिए एक उपयोगी दृष्टिकोण माना जा रहा है।

नॉर्थ जोन इंटर यूनिवर्सिटी महिला बास्केटबॉल प्रतियोगिता 2024–25 की बनी चैम्पियन

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के न्यू जिम्नेजियम हॉल में 24 फरवरी से 1 मार्च के बीच आयोजित नॉर्थ जोन इंटर यूनिवर्सिटी महिला बास्केटबॉल प्रतियोगिता 2024–25 में केयू महिला बास्केटबॉल टीम ने इतिहास रचते हुए प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम किया। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने केयू महिला बास्केटबाल टीम के सभी खिलाड़ियों, कोच एवं खेल निदेशक प्रो. डीएस राणा को इसके लिए बधाई दी।

इस मौके पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल के बतौर मुख्यातिथि न्यू जिम्नेजियम हॉल में पहुंचने पर केयू खेल निदेशक प्रो. दिनेश राणा ने उनका स्वागत किया। कुवि कुलसचिव डॉ. वीरेन्द्र पाल ने विजेता केयू महिला बास्के. टबॉल टीम की सभी महिला खिलाड़ियों को गोल्ड मेडल देकर सम्मानित करते हुए कहा कि वर्तमान में हमारी बेटियां हर क्षेत्र में अग्रणी रहकर विश्वविद्यालय, राज्य एवं देश का नाम रोशन कर रही हैं। उन्होंने कहा कि बेटियों को शिक्षित होने तथा हर क्षेत्र में आगे बढ़ने से ही देश तरक्की कर सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा, शोध, विज्ञान तथा खेल सहित सांस्कृतिक क्षेत्रों में हमारी बेटियां बेटों से कम नहीं है।

3 से 8 मार्च के बीच आयोजित होने वाले ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी महिला बा. स्केटबॉल प्रतियोगिता के लिए भी केयू महिला बास्केटबॉल खिलाड़ियों को शुभक. ामनाएं दी। इस अवसर केयू खेल निदेशक प्रो. दिनेश राणा ने बताया कि केयू ने नॉथ जोन इंटर यूनिवर्सिटी महिला बास्केटबॉल टीम के फाइनल में पंजाब यूनिवर्सिटी चंड. ीगढ़ को 61–45 से मात देकर विजेता का खिताब जीता। वहीं एक अन्य प्रतियोगिता में गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी अमृतसर ने लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी जालंधर को 67 – 37 से हराया।

गौरतलब है कि नॉर्थ जोन इंटर यूनिवर्सिटी प्रतियोगिता में लगभग 41 विश्वविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया था। उन्होंने बताया कि 3 मार्च से 8 मार्च 2025 के बीच कुवि के न्यू जिम्नेजियम हॉल में आयोजित होने वाली ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी महिला बास्केटबॉल प्रतियोगिता के लिए सभी तैयारियां पूरी की जा चुकी हैं। इस मौके पर कोच राजेश राजौंद, राजेश मैहला, मोनिका, मलकीत सिंह डॉ. राजेश सोबती तथा सभी खिलाड़ी मौजूद रहे।

धरोहर म्यूजियम का स्थापना दिवस 28 अप्रैल को मनाया जाएगा

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय स्थित धरोहर हरियाणा संग्रहालय के स्थापना दिवस के अवसर पर 28 अप्रैल को हवन यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्यातिथि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा होगे। धरोहर हरियाणा संग्रहालय हरियाणा ही नहीं अपितु पूरे भारत का एकमात्र ऐसा संग्रहालय है जिसके माध्यम से हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाया गया है। यह युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का एक माध्यम है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय देश का एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जिसने अपनी संस्कृति को संरक्षित करने के लिए धरोहर जैसे संग्रहालय को स्थापित किया। धरोहर कल्चर, इतिहास व विश्वविद्यालय की दूरदृष्टि का परिणाम है। वर्तमान में धरोहर की पहचान विदेषो तक पहुंच चुकी है।

किसी भी जीवंत लोकतंत्र में चुनाव एक अनिवार्य प्रक्रिया : सुनील बंसल

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के विधि संस्थान एवं विधि प्रकोष्ठ द्वारा एक राष्ट्र एक चुनाव विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि कृष्ण कुमार बेदी (कैबिनेट मंत्री, सामाजिक न्याय, अधिकारिता) ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि एक राष्ट्र एक चुनाव आधुनिक भारत की सबसे बड़ी जरूरत है। इसके तहत लोकसभा, राज्यसभा और राज्य विधानसभा चुनाव एक साथ हो सकते हैं जिससे शासन में निरंतरता आएगी, वित्तीय बोझ कम होगा और प्रशासनि पर काम का बोझ कम होगा। विशिष्ट वक्ता भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सुनील बंसल ने कहा कि किसी भी जीव. ंत लोकतंत्र में चुनाव एक अनिवार्य प्रक्रिया है। स्वस्थ एवं निष्पक्ष चुनाव लोकतंत्र की आधारशिला होते हैं। अगर हम देश में होने चुनावों पर नजर डालें तो पाते हैं कि हर वर्ष किसी न किसी राज्य में चुनाव होते रहते हैं। इससे न केवल प्रशासनिक और नीतिगत निर्णय प्रभावित होते हैं बल्कि देश के खजाने पर भारी बोझ भी पड़ता है।

आईटीआर में इको क्लब के अतंर्गत पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

कुरुक्षेत्र।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंध ान संस्थान में इको क्लब के अंतर्गत ब्लूम एंड ब्यूटी गतिविधि के तहत पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर संस्थान की प्राचार्या प्रो. अनीता दुआ ने कहा कि इको क्लब पर्यावरण सरंक्षण से जुडे मुद्दों पर काम करता है व छात्रों के जीवन कौशल को भी विकसित करता है। इसके साथ ही इको क्लब छात्रों, शिक्षकों व समुदाय को एक मंच पर लाने का काम करता है। इस अवसर पर कार्यक्रम का शुभारम्भ पौधा रोपण कर किया गया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की गति. विधियों के माध्यम से छात्रों में पर्यावरण के प्रति जाग. रूकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

उच्च शिक्षा संस्थानों में कौशल आधारित पाठ्यक्रमों और माइक्रो–क्रेडेंशियल्स पर एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन

देश में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एनईपी–2020 लागू करने में प्रथम : कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा

कुरुक्षेत्र।

हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद द्व ारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सहयोग से सीनेट हॉल में उच्च शिक्षा संस्थानों में कौशल आधारित पाठ्यक्रमों और मा. इक्रो–क्रेडेंशियल्स पर एक दिवसीय संवे. दीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

कार्यशाला में हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. कैलाश चन्द्र शर्मा ने कहा कि एनईपी 2020 बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा देता है, जिसमें प्रवेश और निकास के कई विकल्प दिए जाते हैं, जिससे शिक्षार्थियों को अपनी शैक्षणिक यात्रा में अधिक लचीलापन मिलता है। इसे अकादमिक बैंक ऑफ क्रे. डिट (एबीसी) के माध्यम से सुगम बनाया जाता है, जो शैक्षणिक उपलब्धियों के निर्बाध हस्तांतरण और मान्यता को सक्षम बनाता है, व्यक्तिगत और लचीले शिक्षण मार्गों को बढ़ावा देता है। प्रो. कैलाश चन्द्र शर्मा ने कहा कि माइक्रो–क्रेडेंशियल कोर्स उच्च शिक्षा में सीखने को बढ़ाने के लिए एक लचीले और लक्षित तरीके के रूप में उभर रहे हैं। वे छात्रों को कम समय में विशिष्ट कौशल और दक्षता हासिल करने में सहायक हैं, जिससे शिक्षा अधिक सुलभ और उद्योग–प्रासंगिक हो जाती है। एआईसीटीई के सदस्य सचिव प्रो. राजीव कुमार ने कहा कि उच्च शिक्षा का पारंपरिक मॉडल – जिसमें कई वर्षों तक चलने वाली लंबी और महंगी डिग्री शामिल थी – बदलने लगा, तथा इसकी जगह छोटे, उद्योग – केंद्रित कार्यक्रमों ने ले ली। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने कहा कि अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय को नैक द्वारा उच्चतम ग्रेड ए–प्लस–प्लस प्राप्त हुआ है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 को इसके सभी प्रावधानों के साथ विश्वविद्यालय तथा संबंधित कॉलेजों में देश में सर्वप्रथम लागू किया गया है। उन्होंने कहा कि शोध, खेल, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों में विश्वविद्यालय ने बेहतर प्रदर्शन किया है। आईआईएम नागपुर के निदेशक प्रो. भीमार्या मैत्री ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य चरित्र निर्माण, रोजगारपरक शिक्षा तथा एसडीजी के 17 लक्ष्यों को प्राप्त करना है। एनईपी–2020 व्यावसायिक शिक्षा और कौशल–आधारित शिक्षा पर जोर देती है। एनईपी–2020 अल्पकालिक, लचीले और मॉड्यूलर शिक्षण कार्यक्रमों (माइक्रो क्रेडेंशियल्स) को प्रोत्साहित करता है। पहले सत्र में रमेश वेंकट, उपाध्यक्ष, टीएन कौशल विकास निगम ने उच्च शिक्षा में कौशल–आधारित पाठ्यक्रम पर अपनी प्रस्तुति दी। दूसरे सत्र में सुनील कुमार, सहायक निदेशक, बीओएटी (उत्तरी क्षेत्र) ने एनईपी 2020 में परिकल्पित राष्ट्रीय प्रशिक्षुता प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षुता एम्बेडेड डिग्री कार्यक्रम पर अपनी प्रस्तुति दी। इस सत्र की अध्यक्षता कुवि के दूरस्थ एवं ऑनला. इन शिक्षा केंद्र की निदेशक प्रो. मंजुला चौधरी ने की तथा किशनवीर सिंह शाक्य, पूर्व सदस्य, यूपीपीएससी मोडरेटर थे। तीसरे सत्र में अनुज गंगोला, नैसकॉम द्व ारा अपने करियर को भविष्योन्मुख बनानाः आजीवन सीखना विषय पर प्रस्तुति दी गई। इस सत्र के अध्यक्ष एवं संचालक प्रो. पवन कुमार शर्मा, डीन (अनुसंधान) एवं निदेशक आईक्यूएसी, सीयूएच, महेंद्रगढ़ रहे। चौथा सत्र उच्च शिक्षा में पूर्व शिक्षा की मान्यता विषय पर हुआ जिसमें डॉ. राज नेहरू, ओएसडीध्मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार और पूर्व कुलपति, एसवीएसयू, पलवल द्वारा प्रस्तुति दी गई। इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. सुशील कुमार तोमर, कुलपति, जेसीबीयूएसटी, फरीदाबाद व मॉडरेटर प्रो. मंजुला चौधरी, निदेशक, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र रहे।

शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए : शिक्षामंत्री

कार्यशाला के लिए हरियाणा के शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा ने बधाई संदेश प्रेषित किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि युवाओं को जीवन में वास्तविक चुनौतियों के लिए तैयार करने का माध्यम होनी चाहिए। आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक कौशल भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हरियाणा सरक. ार द्वारा शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों के बीच सांझेदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि विद्यार्थियों को प्रशिक्षण और इंटर्नशिप के अवसर मिले।

प्लास्टिक के नुकसान–संयम ही समाधानः प्रो. संजीव

प्लास्टिक मनुष्य जाति के इतिहास में वरदान से कब बहुत बड़ा अभिशाप बन गई, इसका लोगों को समय रहते एहसास ही नहीं हआ। विशेषज्ञ कहते हैं कि अगर मनुष्य ने प्लास्टिक के अत्यधिक प्रयोग में संयम नहीं बरता तो धरती रहने लायक नहीं रहेगी.।

आम लोग इसके नुकसान को कम करने में कैसे योगदान दे सकते हैं? अधिक से अधिक लोगों को इसकी जानकारी देने हेतु कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डीन साइंसिज और कैमिस्ट्री विभाग के प्रोफेसर, डॉ. संजीव अरोड़ा अभियान में जुटे हैं। आप प्लास्टिक के जल–थल पर होने वाले दुष्प्रभावों व उससे निपटने के उपायों पर केंद्रित विषयों पर 200 से अधिक वर्कशॉप विभिन्न संस्थानों में कर चुके हैं। 'केयू न्यूज लैटर' ने अपने पहले संस्करण हेतु उनका इंटरव्यू किया, जिसमें उन्होंने प्लास्टिक के अतिशय उपभोग के संभावित खतरों व उसके समाधान को लेकर बहुत उपयोगी जानकारी सांझी की।

प्लास्टिक का दु प्रभाव अभी छोटा खतरा है, मध्यम दर्जे का है या फिर एक बड़े भूकंप जैसा बनने जा रहा है, जो सबको हिला देगा?

एक बात हर पृथ्वीवासी को समझ लेनी

चाहिए कि खतरा लगातार बढ़ रहा है। संसार में हर साल 350 मीलियन टन प्लास्टिक प्रयोग के बाद फेंका जा रहा है। चिंताजनक पहलू यह है कि इतने कचरे का 10 प्रतिशत हिस्सा हर वर्ष समंदर में फेंका जाता है ।

अगर यह गति रही, तो भविष्य में समंदर में मछलियां कम और प्लास्टिक ज्यादा होगा। कब तक धरती पर इसके विशाल अंबार लगेंगे। अब इसको सहना न जल के वश की बात है न थल की।

क्या एक झटके में हम प्लास्टिक का प्रयोग बिल्कुल बंद कर सकते हैं?

बिलकुल संभव नहीं। पूर्णतः प्रयोग बंद करने का प्रयास सफल नहीं होगा। प्लास्टिक के इस अनियंत्रित आशीर्वाद को नियंत्रित करना ही सम्यक (मोस्ट एप्रोप्रिएट) तरीका होगा। अगर प्लास्टिक का प्रयोग पूरी तरह बंद किया और हम कागज के अत्यधिक प्रयोग पर चले गए तो कागज निर्माण हेतु अतिरिक्त पेड़ काटे जाएंगे। यानी हम एक अति छोड़कर दूसरी अति पर चले गए। और भारतीय ऋषियों ने कहा कि 'अति सर्वत्र वर्जयते' यानी अति तो हर चीज की बुरी है।

सुनने में तो यह विचार बड़ा मधुर लगता है, पर क्या इसको क्रियान्वित करना इतना सरल है?

बिल्कुल सरल है। लोगों को प्लास्टिक के अतिशय प्रयोग की अपनी आदतें बदलनी होंगी। सस्ते प्लास्टिक का मोह हावी हो तो संयम रखें और कुदरत के अनुकूल दूसरे विकल्प प्रयोग करें । लोगों का यह संयम ही प्लास्टिक के संकट का समाधान बनेगा। और फिर अगर लोगा. ने कष्ट उठाया भी, तो किसके लिए उठाएंगे? कहने को तो प्रकृति के लिए, पर व्यावहारिक रूप से अपने आपको बचाने के लिए पूर्ण मनुष्य जाति को विनाश से बचाने के लिए यह प्रयास होगा

सुना है कि आप अपने जाग. रूकता अभियान में युवाओं को ऐसी सामग्री से बने पैन, पैंसिल ,बैग आदि बांटते हैं, जिनका प्रकृति को कोई नुकसान नहीं?

जी बिलकुल। अपनी सामर्थ्य के अनुसार युवाओं के बीच ऐसी सामग्री बांटता हूं। मैं 1500 से ज्यादा पेपर पैन अपने हाथों से बांट चुका हूं जो बायोडिग्रेडेबल होते हैं। रुचिकर पहलू यह है कि हर पैन, पैंसिल के भीतर कुछ बीज रखे होते हैं। प्रयोग के दौरान पैन टूटे तो उसे जमीन में गाड़ देते हैं ताकि वो बीज, पौधा बनकर प्रकृति को शक्ति प्रदान करें। इस रोचकता के चलते युवा इसे खुशी–खुशी अपनाते हैं।

क्या ये पैन, पैंसिल , बैग आदि इतने मजबूत होते हैं कि प्लास्टिक का विकल्प बन सकें? और क्या युवा इनको सहजता से अपनाते हैं?

साफ कहना चाहूंगा कि यह बहुत मजबूत तो होते नहीं, प्रयोग करते वक्त इनको नाजुकपन का ख्याल रखना पड़ता है। पर मजबूत इरादे से जो संभाल. कर प्रयोग करेगा वह प्रकृति को मजबूत करने का काम करेगा । इस धरती को बचाने का हम सबका सांझा जिम्मा है।

प्लास्टिक के नुकसान तो कभी से जग जाहिर हैं, पर बहुत शिक्षित लोग भी इसके मो. हपाश से बाहर क्यों नहीं आ पाए?

देखिए.. हद से ज्यादा सस्ता है, हद से ज्यादा सुविधाजनक। सस्ते और सुविध ाजनक में किसी को अपने मोह में भी बांधने की शक्ति होती है। अब यह मोह त्यागना होगा।

आपने कहा कि प्लास्टिक का प्रयोग पूरी तरह बंद करना सं. भव नहीं? फिर यह छोटे प्रयास हमें कितनी सफलता दिलाएंगे?

सबसे बड़ा खतरा यूज एंड थ्रो प्लास्टिक है? फेंके गए प्लास्टिक के पैन, पॉलिथिन बैग, पाउच, सैशे पेट प्ला. स्टिक बोटल आदि के लगते अंबार चिंता का विषय बन रहे हैं जिनको रिसाइ. कल नहीं किया जाता। अगर लोगों ने रोजमर्रा की यूज एंड थ्रो प्लास्टिक निर्मित वस्तुओं के रूप में कोई सार्थक विकल्प अपना लिया, तो पर्यावरण संरक्षण की राह आसान होगी ।

आपने बहुत महत्वपूर्ण जानका. रियां दी सर, आपका केयू न्यूज लैटर टीम की ओर से आकाश भर आभार

– आपका भी शुक्रिया! कि आप मेरे जनजागरण अभियान का एक और संबल सिद्ध हुए।

साक्षात्कारकर्ता : अनिल , भावना व सृष्टि एमए मास कम्युनिकेशन अंतिम वर्ष

मल्टीमीडिया का जादुई जगत

रीतू , सहायक प्रोफेसर, आई.एम.सी.एम.टी., कुविकु

तकनीक के अपरिमेय विस्तार के युग में मीडिया का एक विस्तारित रूप मल्टीमीडिया बन गया। यहां कई तरह की तकनीक और मानव की रचनात्मकता मिलकर जादुई प्रभाव रचते हैं, जो लोगों को किसी भी कन्टेंट को कई रूपों में समझने में मदद करता है और वो भी खूब रोचकता के साथ।

टेक्नोलॉजी के बढ़ते विकास के साथ, मल्टीमीडिया न केवल मनोरंजन का जरिया बना है, बल्कि शिक्षा, व्यापार, विज्ञापन और संचार के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म्स जैसे कि बाइजू, अनअकैडमी और कोर्सेरा में मल्टीमीडिया का व्यापक उपयोग किया जाता है। मनोरंजन को नई ऊंचाइयों तक पहुंच. ाया है। वेबसाइट और एप्प डेवलपमेंट में मल्टीमीडिया तकनीकों का व्यापक प्रयोग वीडियो लेक्चर्स, इन्फोग्राफिक्स और इंटरएक्टिव कंटेंट से छात्रों को बेहतर सीखने का अनुभव मिलता है। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स (नेटफ्लिक्स, अमेजन वीडियो प्राइम, सोनी लिव और जिओ हॉटस्टार), ऑनलाइन गेमिंग और डिजिटल म्यूजिक स्ट्रीमिंग ने मल्टीमीडिया के जरिए

हो रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर विज्ञापन और ब्रांड प्रमोशन के लिए मल्टीमीडिया कंटेंट (वीडियो, ग्राफिक्स, जी आई एफ इमेजेस) का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

सोशल मीडिया और इ–कॉमर्स के लिए मल्टीमीडिया कंटेंट क्रिएशन की मांग लगातार बढ़ रही है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे व्हाट्सप्प , इंस्टाग्राम, फेसबुक, लिंक्ड इन, थ्रेड्स एवं ट्विटर एक्स पर वीडियो, ग्राफिक्स और ऑडियो के माध्यम से संवाद अधिक प्रभावी हो गया है।

मल्टीमीडिया का सफरनामा की बात करें तो पहले अखबार, पत्रिकाएं और किताबें ही मुख्य संचार माध्यम थे। 1990 में कंप्यूटर ग्राफिक्स, पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन और इंटरनेट के आने से डिजिटल संचार शुरू हुआ। डिजिटल डॉक्यूमेंट्स आए, जिससे फिजिकल पेपर की जरूरत कम हुई। सन् 2000 से 2010 तक, ब्रॉडबैंड और फाइबर इंटरनेट ने इमेज, वीडियो और ऑडियो शेयरिंग को आसान बना दिया। यूटयूब (2005) ने वीडियो कंटेंट को पॉपुलर किया। फेसबुक और इन्स्टाग्राम ने ग्राफिक्स और लाइव वीडियो को प्रमोट किया।

सन् 2010 से 2020 तक, स्मार्टफोन और 4जी/5जी ने मल्टीमीडिया संचार को ज्यादा तेज बना दिया। वर्चुअल मीटिंग, ऑनलाइन क्लास और डिजिटल मार्केटिंग का विस्तार हुआ। कोविड आपदा में जूम और गूगल मीट एप्प ने वर्चुअल मीटिंग्स को आसान बना दिया। टिक–टॉक और इंस्टा रील्स ने शॉर्ट वीडियो कंटेंट को ट्रेंड में ला दिया। टेलीमेडिसिन, मेडिकल एनीमेशन और डिजिटल रिपोर्ट्स मल्टीमीडिया का उपयोग कर रही हैं। मल्टीमीडिया विभिन्न वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और कंपनियों के योगदान का परिणाम है। वेंवर बुश, डगलस एंगल. बर्ट, टेड नेल्सन, टिम बर्नर्स–ली और मार्क एंड्रीसेन जैसे लोगों ने इसकी नींव रखी, और आज यह डिजिटल युग की सबसे महत्वपूर्ण तकनीकों में से एक बन चुका है। आज के युग में मल्टीमीडिया सिर्फ मनोरंजन का साधन हीं नहीं, बल्कि डिजि. टल कम्युनिकेशन की रीढ़ बन चुका है।

कुदरत कुवि पर मेहरबान... भेजे दो और मेहमान

कुवि परिसर। **डॉ प्रदीप राय**

अपने परिसर में हरियाली का खजाना भरकर दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति (प्रकृति) की कृपा का पात्र बनने में न कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने कोई कमी रखी, और न प्रकृति ने उस पर कृपा बरसाने में । बरसों से प्रकृति अपनी समृद्धि विश्वविद्यालय पर बरसा ही रही है, अब उसने अपने दो और प्यारे दूत(दो सुंदर पक्षी) विश्वविद्यालय परिसर में भेज दिए हैं।

अभी मार्च माह में विश्वविद्यालय की जैव विविधता के खजाने को और समृद्ध करने जो मेहमान परिंदे आए हैं, उनके नाम हैं 'ओरिएंटल पाइड हॉर्नबिल' और इंडियन पैराडाइज फ्लाई कैचर । हॉर्नबिल की सामान्य पक्षी से दोहरे आकार की बड़ी– सी रंग बिरंगी चोंच और बड़ा– सा शारी. रिक आकार अद्भुत है। प्राकृतिक संतुलन के नजरिए से इसके यहां वास करने के

बड़े गहरे अर्थ हैं।

प्राणीशास्त्र विभाग के शिक्षकों व विद्यार्थियों ने अमुक पक्षी को गत 27 मार्च को पहचान लिया और फोटो इत्यादि करते हुए उसको सुस्वागतम बोल दिया। संयोग यह रहा कि आयोजित 28 मार्च की दोपहर को इंडियन 'पैराडाइज को उड़ान भरते हुए कैमरे में कैद किया। अमुक पक्षी हॉर्नबिल की तरह सिर्फ पहली बार तो कुवि परिसर में नया तो नहीं आया, पर अनोखी

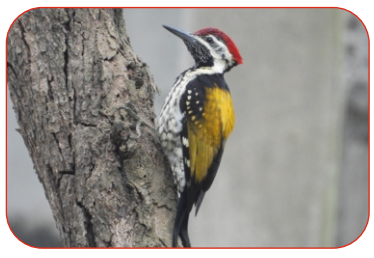

बात यह है कि यह 15 साल बाद कैंपस में लौटा है। इस संदर्भ में प्राणीशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रों. डॉ दीपक राय बब्बर ने बताया कि इन पक्षियों की अटखेलियों और गतिविधियों को काफी हद तक विभाग ने जान और पहचान लिया है। हमने पर्याप्त फोटो करके उसकी विभिन्न गतिविधियों को रिकॉर्ड के लिए संजो लिया है।

करीब 473 एकड़ में फैले कुरुक्षेत्र विश्वविद्याल की घनीभूत हरियाली में कई ऐसे परिंदे हैं जो आजके समय में जल्दी से तो कहीं नजर नहीं आते। प्राणीशास्त्र विभाग के शोधार्थी पीयूष गोयल ने बताया कि 'विश्वविद्यालय परिसर में कुल 125 प्रजातियों के पक्षियों का डेरा है। मोरों का तो यहां अपना भरापूरा साम्राज्य है ही। बुलबुल,काली चील,गाय बगुला जिसे इंग्लिश में कैटेल इगरेट कहते हैं, ब्लैंक रंपड यानी काली पूंछ वाला, धूसर प्रीनिया यानी अशी प्रीनियाए किंगफिशर सहित बहुत प्रजातियों के पक्षी निरंतर कैंपस को महका रहे हैं। इकोसिस्टम में इनकी भू. मिका इतनी बड़ी है, जो शब्दों में भी पूरी तरह व्यक्त नहीं की जा सकता।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय 1957 में ज्ञान केंद्र के रूप में आरंभ हुआ फिर यह जैव विविधता संरक्षण का स्थान भी बना। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा कैंपस में जैव विविधता पर विशेष ध्यान देने के लिए निरंतर संबंधित शिक्षकों को प्रेरित करते रहे हैं। वे निरंतर विशेषज्ञ शिक्षकों से इस संबंध में अपडेट लेते रहते हैं। पक्षियों के प्रति आदर का भाव बनाए रखने के लिए विश्वविद्यालय विश्व गौरेया दिवस व पर्यावरण दिवस आदि पर जाग. रूकता अभियान चलाने के साथ घरों व संस्थानों में पक्षियों के लिए जल पीने की व्यवस्था हेतु मिट्टी के कसोरे वितरित करता है।

Editor's Desk

KU Newsletter: A Beacon of Campus Creativity and Communication

Prof. Dr. Maha Singh Poonia
Director,
IMC & MT

It is a matter of immense pride and joy that, under the visionary leadership and inspiration of Professor Som Nath Sachdeva, Hon'ble Vice Chancellor of Kurukshetra University—which has been accredited with the prestigious A++ grade by NAAC—the university has launched its very own newspaper, KU Newsletter. This initiative, spearheaded by the Department of Public Relations in collaboration with the IMC& marks a significant milestone in the university's journey of academic excellence and creative expression. The KU Newsletter is a testament to the collective efforts of the faculty and students of the Institute of Mass Communication and Media Technology, who have shown active and enthusiastic participation in its content creation and production. The publication showcases a rich tapestry of university life and includes diverse sections such as news reporting, editorials, features, photography, cartoons, campus stories, memoirs, and student achievements. It further covers alumni interactions, interviews, employment opportunities, monthly campus activities, sports updates, science and research news, NCC and NSS programs, and events related to health, culture, and youth welfare. In a unique and inclusive effort, the newsletter also features creative contributions from students across all departments and institutes of the university. This not only broadens the scope of participation but also fosters a sense of unity and shared pride within the university community. Moreover, special highlights such as storytelling and podcasting news, library developments, activities of six dynamic campus clubs, and updates on the Green & Clean Campus campaign are noteworthy additions. These initiatives offer practical exposure and invaluable skill development opportunities to the students of Mass Communication, Graphics and, and Printing, bridging academic learning with real-world media experience. On this momentous occasion, I extend my heartfelt congratulations and best wishes to the faculty, students, and entire Kurukshetra University fraternity for their dedication and creativity in bringing the KU Newsletter to life. May this publication continue to grow as a vibrant platform for communication, innovation, and inspiration.

Rising Future of Animation

Monika Dua
Assistant Professor,
IMC & MT

With the increasing use of digital and social media, the importance of Graphics and Animation is growing rapidly. These elements are now widely used in animation films, television spots, online and video advertisements. In India, advertising has become more creative, with Graphics and Animation playing a key role. As brands strive to create fresh, adaptable content, the demand for skilled artists and graphic designers continues to rise. Today, hundreds of production houses and animation studios operate successfully with the support of a loyal client base. According to the FICCI-EY report (March 2022), India's Animation industry grew by 24% and is expected to reach 18,000 crore by 2024. It is currently valued at over $2 billion and is projected to grow at a CAGR of 11.9% from 2021 to 2026. By 2026, it may reach approximately $2.2 billion, reflecting its increasing share in the Media and Entertainment sector (5-6%). Key drivers behind this growth include rising consumption of OTT content, the use of animation in digital marketing, and India's cost-effective, skilled labor force—making it a global outsourcing hub. Indian animators are increasingly recognized for their talent, and the demand for high-quality content across digital platforms is fueling the industry's expansion. Moreover, government support through initiatives like the National Center of Excellence for Animation, Games, and VFX is fostering innovation and research. These developments, along with growing global interest in Indian animated series and films, indicate a strong future for the industry. With expanding opportunities, both domestic and international, animation is emerging as one of the most promising careers.

Public Relations: Statics and Dynamic

Gaurav Kumar
Assistant Professor,
IMC & MT

In the middle of the second decade of the 21st century of the world has expanded. The world is continuously moving forward at a very fast pace through all the means of information technology. In taking the world forward every moment, the mediums of public relations which include print media, electronic, online media, digital media, social media and artificial intelligence are important. In this scenario Dr.Abhinav's new book titled 'Public Relations Statics and Dynamics (Pages 282, MRP 499 /- Pen to Print Publishing New Delhi) presents a detailed description of the information departments established by the state govt. and the Central Govt., their extensive public relations work with international public relations agencies, and careers in the public relations. Under this effort,

The first chapter explores the concept of public relations, definitions, supporting factors, principles as well as e-PR that has evolved with the changing times.

In Chapter Two, the history of public relations in the world is discussed. Along with this, various mediums of public relations have also been included in this which includes all media.

Chapter three includes the usefulness of public relations in times of crisis, four P's for public relations campaigns, publicity, propaganda, difference between public relations and advertising, difference between public relations and publicity, difference between public

New Book Arrival

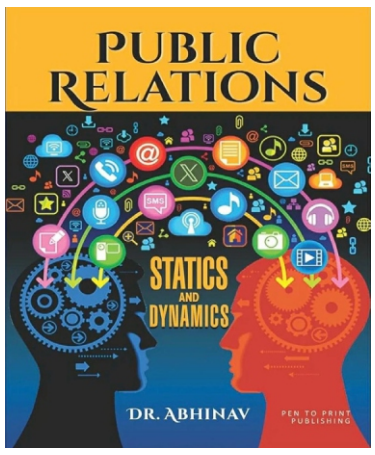

relations and marketing.
Chapter four is focused upon public relations in the state and central governments.
Chapter five focuses on the usefulness of public relations in various fields. This includes public relations in educational institutions, public relations in hotels, public relations in hospitals, public relations in photography, public relations in insurance sector, public relations in public sector, public relations in defense. With this, career possibilities in public relations have been highlighted.

Sixth chapter of the book gives a detailed description about the journalism in Haryana, including the history of the press in Haryana, local newspapers, magazines, all radio stations, community radio stations, and media career. The author has tried to draw the attention of the students towards the advancements in various career fields of journalism and public relations. Undoubtedly, a student of journalism will benefited from the information available in this book about both careers.

Self-Awareness: The Key to Personal Growth and Effective Management

Dr. Tapesh Kiran
Assistant Professor,
IMC & MT

I am indeed a king, because
I know how to rule myself"
- by Italian poet Piekro Aretino

Self-awareness is the foundation of personal growth and effective management. Italian poet Piekro Aretino once remarked, "I am indeed a king, because I know how to rule myself." This highlights the power of understanding oneself. Self-awareness involves recognizing one's personality, emotions, strengths, weaknesses, values, habits, and psychological needs. It allows individuals to understand their reactions, build better relationships, and make more confident decisions. For leaders and managers, self-awareness enhances emotional intelligence, improves intuition in complex decision-making, and fosters stronger interpersonal skills. Managers with high emotional awareness can make wise decisions even amid ambiguity, balancing their "gut feeling" with rational thinking.
Key elements of self-awareness include:

•Personality:
Understanding your personality helps you find suitable environments and avoid stress-inducing ones.

•Values:
Knowing what truly matters allows better focus and prioritization in daily life.

•Habits:
Identifying both helpful and harmful habits aids in more effective interactions.

•Needs:
Psychological needs like respect, belonging, and power drive motivation. When unmet, they can lead to conflict or stress.

•Emotions:
Emotional self-awareness enables better regulation of feelings and reactions, much like understanding how a car works makes it easier to drive.
Psychologists distinguish between self-awareness into public (how we appear to others) and private (internal self-recognition). Practicing both forms helps individuals grow in confidence, reduce judgment anxiety, and gain a deeper understanding of their character. Ultimately, self-awareness is the master key to success in both personal and professional life.

Print Media: Strongest Way of Communication

Rakesh Kumar
Assistant Professor,
IMC & MT

Print media is the strongest medium of communication, which improves the living standards of human beings. Print media is an effective way to communicate with people and make a longer impact on the minds of readers with more in-depth reporting and analysis.It plays an important role in the development of communication and keep the people update by providing the latest news of world and nations about various topics such as sports, politics, forest, weather, agriculture, stock market etc. Print media is provide an education environment at world level through its various applications which are lightweight, portable, disposable publications printed on paper and circulated as physical copies in forms of books, newspapers, magazines, printed package of various products. Electronic media delivers more information in less time, yet the importance of print media remains undeniable. Several characteristics make print media highly demanded, such as being consumer-friendly, lightweight, portable, offering attractive print quality, and consisting of disposable or reusable publications. Print media also leaves a lasting impression on readers, provides an effective platform for advertising and promotion, and often ben - efits from government support. Various printing processes are used for printing on different print media applications including Letterpress Printing, Screen Printing, Offset Printing, Gravure Printing, Flexographic Printing, and Digital Printing. One key advantage of print media is its ability to create a deeper and more lasting impact on readers' minds. It is accessible at any time, even in the absence of electricity/ internet. Print media helps improve people's standard of living by keeping them informed with the latest national & international news across various subjects. Thus, its role in communication is significant, as it delivers information through high-quality printing & visually appealing presentation.

मीडिया के विद्यार्थियों ने सीखी संसदीय रिपोर्टिंग

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने 10 मार्च को हरियाणा विधानसभा के बजट सत्र–2025 का अवलोकन किया। इस शैक्षिक भ्रमण में संस्थान के सहायक प्रोफेसर डॉ. अभिनव, गौरव कुमार और सुनीता के साथ जनसंचार के एम. ए. अंतिम वर्ष और एम.एस.सी. अंतिम वर्ष के विद्यार्थी सम्मिलित थे। इस अवसर पर जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक प्रोफेसर महासिंह पूनिया ने कहा कि संसदीय और विधानसभा की रिपोर्टिंग का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का एक अहम हिस्सा है। उन्होंने कहा कि इस शैक्षिक भ्रमण से विद्यार्थियों में भारतीय राजनीति, प्रशासनिक व्यवस्था, बजट प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया तथा संसदीय प्रक्रिया की समझ विकसित होगी।

उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह के शैक्षणिक भ्रमण जनसंचार संस्थान के विद्यार्थी प्रत्येक बजट सत्र के दौरान करते रहे हैं जिससे जनसंचार संस्थान और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास करने के उद्देश्य को बल मिलता है। संस्थान के विद्यार्थियों और संस्थान का चहुंमुखी विकास मुख्य उद्देश्य है और इसी से विद्यार्थियों को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा तथा समाज को प्रतिभावान पत्रकार मिलेंगे। प्रतिभावान पत्रकारों से ही अच्छी सूचनाओं का सृजन होता है। जिससे स्वस्थ समाज और देश बनता ह

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र लोकसभा के सांसद श्री नवीन जिंदल के सौजन्य से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान के 23 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 21 मार्च को लोकसभा में बजट सत्र–2025 का अवलोकन किया। प्रतिनिधिमंडल ने सांसद श्री नवीन जिंदल से रू–ब–रू होकर संसदीय क्षेत्र और संसदीय प्रणाली के संबंध में विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि इस शैक्षणिक भ्रमण से विद्यार्थियों में भारत की संसदीय प्रणाली, बजट सत्र की व्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था और उसके कार्य–निष्पादन की आंखों–देखी रिपोर्टिंग करने की उन्नत समझ विकसित होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इस तरह के शैक्षणिक भ्रमण संस्थान द्वारा पूर्व में भी होते रहे हैं, जिससे संस्थान, विश्वविद्यालय, प्रदेश एवं राष्ट्र के उन्नत निर्माण में योगदान मिलता रहा है। इस अवसर पर 23 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के शैक्षणिक भ्रमण का नेतृत्व कर रहे डॉ. अभिनव ने बताया कि विद्यार्थियों ने लोकसभा के अवलोकन के बाद जोधपुर पोलो ग्राउंड में चल रही ''ऑल इंडिया पोलो चौंपियनशिप'' का मैच देखा। मैच के बाद प्रतिनिधिमंडल ने सांसद श्री नवीन जिंदल को स्मृति चिह्न भेंट कर आभार प्रकट किया। इस अवसर पर सांसद ने कहा कि जीवन में हर पल सीखते रहना चाहिए क्योंकि सीखते रहने से ही आगे बढ़ा जा सकता है और इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण होते रहने चाहिए।

संगीत अकादमी करेगी दो दिवसीय कला समीक्षा कार्यशाला

कुरुक्षेत्र। विद्यार्थी अपनी कला संस्कृति से जुड़कर ही आगे बढ़ें ताकि जीवन में अपनी कला संस्कृति, नाट्य विधाओं को विश्व स्तर पर पहुंचा सकें, क्योंकि युवा ही कला को अपने प्रचार–प्रसार माध्यम से आगे बढ़ा सकते हैं, ये कहना है संगीत नाटक अकादमी, कल्चर मिनिस्ट्री के सचिवे राजू दास का, जो जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थ . ान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र के विद्यार्थियों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने कहा कि कला का प्रचार–प्रसार युवाओं के हाथ में है और जब तक वे मंच पर कला का प्रदर्शन नहीं करेंगे तब तक कला विस्तार नहीं होगा। उन्होंने कहा कि संगीत नाटकअकादमी का मुख्य उद्देश्य देशभर की लोक कलाओं का संरक्षण करना एवं उनसे जुड़े कलाकारों को मंच प्रदान करना है। उन्होंने कहा

कि भविष्य में संगीत नाटक अकादमी मिलकर जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्यो. गिकी संस्थान के साथ दो दिवसीय 'कला समीक्षा' पर कार्यशाला का आयोजन करेंगी जिससे विद्यार्थियों में कला के प्रति अच्छी समझ होने के साथ –साथ भविष्य में रिपोर्टिंग व कला समीक्षा में अपना करियर बना सकेंगे। उन्होंने कहा कि कला समीक्षक के क्षेत्र में पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए रोजगार की भरपूर संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि गणतंत्र दिवस परेड पर संगीत नाटक अकादमी, कल्चर मिनिस्ट्री, भारत सरकार के द्व ारा देशभर के 6000 लोक कलाका बनाने में सुविधा होगी ''जयति जय मम भारतम्' गीत पर लोक नृत्य प्रदर्शन एक साथ किया गया। जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक प्रोफेसर महासिंह पुनिया ने कहा कि विद्यार्थी अपनी जड़ों को कला से सिंचित करें और आधुनिकता के साथ बदलना सीखें ताकि समय के साथ अपनी कला, संस्कार, संस्कृति को संरक्षित किया जा सके।

संगीत नाटक अकादमी, कल्चर मिनिस्ट्री भारत सर . कार के सानिध्य में जल्द ही संस्थान में दो दिवसीय कला समीक्षा कार्यशाला का आयोजन करेगा। इस अवसर पर राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कथक नृत्यांगना रूपा दास ने ''ऊर्मिला'' के जीवन के संयम व आत्मविश्वास को कत्थक नृत्य के द्वारा विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी भाव–भंगिमाओं के माध्यम से रामायण के पात्र लक्ष्मण और ऊर्मिला के दृश्य को प्रदर्शित किया। जिस पर संस्थान के सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने खड़े होकर तालियों के साथ रूपा दास को प्रोत्साहित किया। उन्होंने महर्षि वाल्मीकि के रामायण लेखन में लक्ष्मण एवं ऊर्मिला के संवाद को बहुत मार्मिक ढंग से प्रस्तुति दी। इस नाटक को जहां मंच पर प्रस्तुति रूपा दास ने दी वहीं गीत और संवाद राजू दास ने दिया।

फोटोग्राफी : एक रुचिकर एवं रचनात्मक क्षेत्र

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान में फोटोग्राफी क्लब के इंडक्शन कार्यक्रम का आयोजन, संस्थान के सेमिनार हॉल में किया गया। इस इंडक्शन कार्यक्रम में फाइन आर्ट विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के पूर्व चेयरमैन एवं एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. पवन कुमार मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुए। इस एकदिवसीय फोटोग्राफी क्लब के इंडक्शन कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक एवं फोटोग्राफी क्लब के संरक्षक प्रों. महासिंह पुनिया ने की। इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के फाइन आर्ट विभाग के पूर्व चेयरमैन एवं एसोसिएट प्रों. डॉ. पवन कुमार ने कहा कि फोटोग्राफी एक ऐसी विधा है जिसके जरिये हम अपने भाव एवं विचारों को तस्वीरों के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कहा कि फोटोग्राफी का वर्तमान कैमरा बहुत हल्का–फुल्का एवं बेहतरीन है, लेकिन इसकी शुरुआत का दौर बहुत कठिन था।

फोटोग्राफी का इतिहास बताते हुए उन्होंने कहा कि प्रारंभिक कैमरे लगभग एक कमरे के बराबर होते थे, जिन्हे पिनहोल कैमरा कहा जाता है जिसमें उल्टा प्रतिबिंब दिखाई देता था लेकिन समय के साथ वो पॉकेट–फ्रेंडली होते चले गए। उन्होंने विद्यार्थियों को फोटोग्राफी तकनीक, एंगल, और एंगल की बारीकियों को प्रैक्टिकल रूप से समझाया।

इस अवसर पर जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक प्रोफेसर महासिंह पुनिया ने कहा कि फोटोग्राफी का क्षेत्र एक बहुत रचनात्मक क्षेत्र है, जिसमें विद्यार्थियों को अपना कौशल निखारने में सहायता मिलती हैं। प्रों. पुनिया ने विद्यार्थियों को फोटोग्राफी क्लब के इंडक्शन कार्यक्रम के तहत प्रोत्साहित करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में आस–पास की चीजों को देखने का नजरिया बिल्कुल अलग होता है।

इस अवसर पर जनसंचार एवं मीडिया प्रौद्योगिकी संस्थान के असिस्टेंट प्रोफेसर एवं फोटोग्राफी क्लब के कोऑर्डिनेटर डॉ. रोशन मस्ताना ने कहा कि फोटोग्राफी क्लब, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा की दूरदर्शि . ता का परिणाम है, जिसके तहत सभी विभागों एवं संस्थानों में फोटोग्राफी क्लब संचालित हैं। उन्होंने कहा कि फोटोग्राफी क्लब के विभिन्न उद्देश्य हैं, जिनमें विद्यार्थियों को तकनीकी ज्ञान की समझ के साथ आगे बढ़ाया जा सकेगा। इसके तहत ही विद्यार्थियों को फोटोग्राफी की बारीकियों के संबंध में असीम जानकारियां प्राप्त होंगी जो उनके औद्यागिकी भविष्य हेतु मार्गदर्शक का कार्य करेंगी। उन्होंने कहा कि फोटोग्राफी क्लब के इंडक्शन कार्यक्रम के तहत विद्यार्थिगण इस क्षेत्र में अपने स्वर्णिम भविष्य का निर्माण कर सकेंगे। हम सभी वाकिफ हैं कि फोटोग्राफी की पहले के समय और वर्तमान में महत्वपूर्णता रही है और रहेगी, क्योंकि हजार शब्दों के बराबर एक 'फोटो' होता है। इस अवसर पर फोटोग्राफी क्लब के सदस्य, जोकि विभिन्न विभागों एवं संस्थानों से संबंधित थे, उपस्थित रहे। इस अवसर पर संस्थान के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आबिद अली, डॉ. अभिनव, सुनिता, रितु, सचिन, गौरव कुमार, नितिन चावला, राकेश, प्रीति, राहुल अरोड़ा आदि उपस्थित रहे।

50 लाख से अधिक लोगों ने 'धरोहर संग्रहालय' में देखी अपनी संस्कृति

डॉ. अभिनव
सहायक प्रोफेसर, आईएमसीएमटी

अपणी 'संस्कृति और अपणी माटी' पर प्रत्येक जनमानस को गर्व होता है, इसी 'गर्व' के साथ प्रत्येक हरियाणवी का मान–सम्मान जुड़ा हुआ है। हरियाणा प्रदेश की संस्कृति एवं सभ्यता पर प्रत्येक हरियाणवी को 'गर्व है क्योंकि वह उसकी जड़ों से जुड़ा हुआ है। इसी संस्कृति एवं सभ्यता को नई पीढ़ी से आत्मसात करवाने और उसे निरंतर आगे बढ़ाने के उदेश्य हेतु कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण 'हरियाणा संग्रहालय धरोहर' के नाम से किया गया है। धरोहर हरियाणा संग्रहालय की स्थापना 28 अप्रैल 2006 में की गई थी जिसमें धरोहर हरियाणा संग्रहालय का पहला चरण 28 अप्रैल, 2006, दूसरा चरण 6 अप्रैल, 2013 को स्थापित किया गया।

धरोहर हरियाणा संग्रहालय में पचास (50) वर्गों में प्रदर्शित हरियाणवी संस्कृति से संबंधित हजारों की संख्या में कलाकृतिय. ां दर्शायी गई हैं। हरियाणा की सांस्कृतिक ध रोहर को एक स्थान पर प्रदर्शित करने की बदौलत इस संग्रहालय का नाम धरोहर रखा गया। यह हरियाणा के लोक सांस्कृतिक परंप. रा का ऐसा जिवंत उदाहरण है जिसमें लोक जीवन की विभिन्न झाकियों का दर्शन होता है। धरोहर संग्रहालय के प्रथम भाग में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की विकास यात्रा को विभिन्न छायाचित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1957 में की थी। इसमें इसके इतिहास को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। इसके अलावा यहां पर प्राचीन काल, मध्यकाल और आध ुनिक काल के सिक्कों के साथ–साथ 200 से ज्यादा प्राचीन शस्त्र जैसे तलवार, भ. ाला आदि भी हमें देखने को मिलते है।

धरोहर का प्रथम तल हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत का वह खजाना संभाले हुए हैं जहां हरियाणा के लोक वाद्य यंत्र बीन, बांसली, सारंगी, नगाड़ा आदि को प्रदर्शित कर यहां की संगीत परंपरा को दर्शाया गया है। यहां पर आप खेती–बाड़ी के औजार खुरपा, दरांती, गंडासा वह हलों की विविधता को मूल रूप से देख सकते हैं। इसके अलावा यहां पर एक बहुत बड़ा हुक्का आपको सहज ही अपनी और आकर्षित करता है। यहां सजी विभिन्न पोशाकें एवं बर्तन भी सहज ही अपनी और आकर्षित करते हैं। इसके अलावा इसमें रसोई के माध्यम से हरियाणा की लोक सांस्कृतिक झांकी की अनूठी मिसाल पेश की गई है। धरोहर संग्रहालय भाग– 2, अप्रैल 2013 में जनता को समर्पित किया गया। इसके अंतर्गत हरियाणवी लोक वासियों की देहाती तहजीब के साथ स्थापित गांव का वास्तविक स्वरूप उकेरा गया है। धरोहर के इस भाग की शुरुआत गांव के दादा खेड़ा से होती है जिसको ग्राम–देवता कहा जाता है। प्रदेश में गांव की स्थापना से पहले इस ग्राम देवता की प्रतिमा स्थापित किए जाने की परंपरा रही है। यहां पर हरियाणा के लोक व्यवसायों को सुंदर तरीके से दर्शाया गया है। हरियाणा के काम धंधों में ठठेरा, मनियार, कुम्हार, पत्थर शिल्पकार, बढ़ई दर्जी, चर्मकार, जुलाहा, तेली, लोहार, बनिया के अनेक नायाब नमूने हमें अपनी और आकर्षित करते हैं। पनघट का दृश्य गांव के आंचल की झलक को और अधिक सजीव बनाता है। संग्रहालय के महत्वपूर्ण अंग हैं यहां की नाट्यशाला और चौपाल जो हरियाणा की संस्कृति के विभिन्न रंग बिखेरते हैं। धरोहर संग्रहालय के क्यूरेटर एवं सुपरवाइजर डॉ. कुलदीप आर्य के अनुसार धरोहर संग्रहालय में अभी तक देश–प्रदेश एवं विदेशों से 50 लाख से अधिक लोगों ने भ्रमण किया है, और 8000 से ज्यादा इससे संबंधित तथ्यों पर शोधार्थियों ने शोध किया है। इससे सा. बित होता है कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय अपनी संस्कृति के संरक्षण में सफल रहा है। धरोहर संग्रहालय ने हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत को उम्दा तरीके से धरोहर संग्रहालय' दिन–प्रतिदिन सहेजने का कार्य कर रहा है। उन्होने कहा कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुल. पति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में 28 अप्रैल को 'धरोहर हरियाणा संग्रहालय के फाउंडेशन दिवस' के रूप में मनाया जाएगा।

इस दुनियां के खेल अजब सब कहद्यूं करकैं ख्याल सखी।

सन्दीप कुमार
शोधार्थी

इस दुनियां के खेल अजब सब
कहद्यूं करकैं ख्याल सखी।
ध्यान लगा सुणिए सुपने का
कहद्यूं सारा हाल सखी। टेक।
1. सुपने म्हैं जणूं दिया दिखाई
ईश्वर का दरबार,
एक आत्मा चाल पड़्यी हो
मृतलोक नैं तैयार,
पान.फूल लिये हाथां के म्हां कर
सारे शिंगार,
भूतकर्म नैं भोगण खात्तर चली
सभा तै बाहर,
धरती उपर जन्म लेण नैं लेवै
गर्भ की ढाल सखी।
2..धरती पै एक बीर.मर्द नैं कर्या
पुत्र का विचार हे,
मैथून योग आह्लाद कर्या मिले
रज.वीर्य एकसार हे,
एक रात म्हैं कलल पांच म्हैं
बुलबुले सा आकार हे,
दस दिन म्हैं होया बेर मान फेर
अण्डे कैसा भार हे,
ऐसे जीव म्हैं जीव बणै जैसे
धरती म्हैं आल सखी।
3 .पहले म्हीनै मस्तक बणता
दूज्जै पैर और हाथ बणे,
तीज्जै म्हीनै रोम, नाक, मुंह
कान, आंख, नख, गात बणे,
फेर मेद, मज्जा, अस्थि, शुक्र,
रस, रक्त, मांस ये सात बणे,
चौथे म्हीनै लगी जीव नैं भूख,
तृष्णा, प्यास बणे,
ऐसे काया बणती जैसे बणते पत्ते
डाल सखी।
4. छठे म्हीनै चढ्यी कांजळी
कोख दाहिणी फिरण लग्या,
मां के खाये अन्न, पाणी तै बण्या
खून पेट म्हैं भरण लग्या,
कड़वेए तीखेए गर्म भोज तै गात
नरम सा जळण लग्या,
पड़्या गंदगी म्हैं मुर्छा आवै जूण
लड़ण तै डरण लग्या,
गर्भ जेळ की कड़ी सजा तै पा
ज्यावै कती काल सखी।
5.. जन्म रात होवै बड़ी बली वा
नोम्मै म्हीनै आण लगी,
लाग्यी दाब अपान जीव कै कोख
तै बाहर धकाण लगी,
आ पड़्या मूत म्हैं ठगणी छळग्यी
सारा ज्ञान भुलाण लगी,
सुबक.सुबक कै रोवण लाग्या
मोह, माया, ममता, छाण लगी,
फेर मुर्छा दे बेमाता आग्यी
लिख्या दीप सब भाल सखी।

डॉ. अशोक कुमार

न्यारा हरियाणा सबसे न्यारा हरियाणा है,
जहां दूध–दही का खाना है।
मूर्ध मुछल यहां के छोरे, गले ताबीजी
काले डोरे, सीधा सादा बाना है,
यह है मेरा हरियाणा है।

खेतों में किसान है, सीमा पर जवान है,
विदेशों ने भी इसका नाम पहचाना है।
बीज बीवै उपजै सोना, धरती यहां की
सोना है,
अशोक ने भी हमेशा गीत प्यार का गाना
है।

मेरा हरियाणा सबसे अच्छा
हरियाणा है।
जहां दूध–दही का खाना है।
सीधा सादा बाना है।
यह मेरा हरियाणा है।

एक नवंबर को जन्म हुआ, अब
हरियाणा जवान हुआ,
तरक्की करते जाना है, यह मेरा
हरियाणा है।

कुरुक्षेत्र पवित्र भूमि पर, महाभारत बीती
सारी है,
देखने ब्रह्मसरोवर जाना है, यह मेरा
हरियाणा है।
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तो विदेशों में
मशहूर है,
पढ़ने यहां पर आना है, यह मेरा
हरियाणा है।

मानसी, बीएमसी

ननारी तू नारायणी है
तेरी कहानी जैसे यमुना का पानी है।
समय ने तुझे दूषित किया है,
लेकिन तूने संसार का केवल उद्धार
किया है।

तू धरती जैसे अपने ऊपर पूरे परिवार
का बोझ उठाती है,
सबकी बातें सुनकर खुद क्यों चुप रह
जाती है?

नारी तू जगत जननी है,
अब तुझे अपनी उपस्थिति दर्ज करनी
है।

समाज ने तुझे नीचा दिखाया है,
पर तूने अपना अस्तित्व सदा ऊँचा
उठाया है।

तू देवी की तरह सारा संसार चलाती
है,
फिर क्यों डरके अपनी प्रतिभा छुपाती
है?

अब तुझे अपनी शक्ति पहचाननी है,
तुझसे इस जग की कहानी है।

नारी तू नारायणी है,
तू एक अमिट कहानी है।

कीर्ति, एम.ए जनसंचार

पर्यावरण में हमारे चारों ओर की चीजें शामिल होती हैं, हवा, पानी, जमीन, पौधे और जानवर। यह हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है। लेकिन आज मानव गति. विधियों जैसे पेड़ों की कटाई, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग के कारण पर्यावरण खतरे में है।
विकास का मतलब है उद्योग, तकनीक और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में प्रगति। यह हमें बेहतर नौकरियाँ, परिवहन, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ देता है। लेकिन कई बार विकास से पर्यावरण को नुकसान होता है। जैसे कि फैक्ट्री बनाने से प्रद. ूषण बढ़ता है और सड़क बनाने के लिए जंगलों की कटाई से वन्य जीवों का नुकसान होता है।
इसलिए हमें सतत विकास की जरूरत है, ऐसा विकास जो पर्यावरण को नुक्सान पहुंचाए बिना हमारी जरूरतें पूरी करे। पेड़ लगाना, सौर और पवन ऊर्जा का उपयोग, पानी बचाना और कचरे को कम करना अच्छे उपाय हैं।
हमें बच्चों को प्रकृति का महत्व सिखाना चाहिए। इसमें हमें तीन 'आर' के महत्व पर विशेष बल देना चाहिए जो इस प्रकार से है– 1. रिड्यूस, 2. रि–यूज,
3. रिसाईकिल। अगर हम मिलकर प्रयास करें, तो एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जहां विकास के साथ–साथ पर्यावरण भी संरक्षित रहेगा एवं मानव सभ्यता अनेक प्रकार विकारों से भी सु. रक्षित रहेगी।

अंजली, बीएमसी

सास ससुर न मैं आपने माँ बाप
समझूँगी , छोटा देवर बेटा के सा
आप समझूँगी, दूसरो की चुगली
करना पाप समझूँगी,घरस्त धरम न
मैं प्रभु का जाप समझूँगी, दासी बन
करूँ टहल पति का हुकुम बजाना
स, उस सावित्री जू पति वरता का
धरम निभाना स, ओढ़ पहर सिंघार
करा कती सादा बाना स ,राजी होका
घाल मने साजन घर जाना स
10 दिन भीतर आ लुंगी कदे रोवती
फिरए ,ना लेऊ बुराई कायए की कदे
सोच म मरए, सयानी बेटी घरा बाप
के ना भेजए बिना सरए, मैं समझन
जोगी होरी तू किस बात त डरए, हे
री माँ हस के बेटी न विदा करए मेरे
बाबुल सयाना स,
सासरे मे जाके घर का मान बढ़ाना
स, हे री माँ ओढ़ पहर सिंघार करा
कती सादा बाना स,राजी होका घाल
मने साजन घर जाना स
रुका पड जा गाँम म बहू जोर की
आई, राजी होय सारा कुनबा यारी स
नई, सास, ननद ,तायस ,पितस मनए
सब तरण आई, डॉले म त
उतर चली संग ननदी का भाई ,
सासरे में पीहर जैसा मिला ठिकाना
स,सोनीपत म छोटा सा एक गाम
बुटाना सहे री माँ ओढ़ पहर
सिंघार करा कती सादा बाना स
राजी होका घाल मने साजन घर
जाना स।

नंदिनी, बीएमसी

ख्यालों और उलझनों के बीच ठहर जाए क्या होगा...
खामोश आवाजें जो खुद को नहीं पहचानती, जिंदगी को रेस से ज्यादा कुछ नहीं मानती।

बेतहाशा चलते ये लोग रुकना नहीं जानते, अहम और अहमियत की सीमा पर झुकना नहीं जानते।
बेरोक भागते हैं ये अंगिनत मुरझाए चेहरे, जिन्होंने खुद पर लगाए हैं खुद के जज्बातों के पहरे।

चमक.धमक से सजी, अंदर से खोखली हैं ये इमारतें सारी,
दिखावे में जिंदगी ढूंढती हैं
बेबस इंसानों की बस्ती बेचारी।
रिश्ते.नातों की सब बातें झूठी हैं,
रूह से फकीरी कुछ इस कदर रूठी है। मैंने देखी है मुस्कुराते चेहरों की दोहरी पहचान, जब अरसे से साथ बैठा शख्स भी लगा मुझे अनजान।

सिलसिलों की ये कहानियां कहीं पन्नों पर नहीं लिखीं, जज्बातों से चलने वाली दुनिया कहीं नहीं दिखी।
तजुर्बे की स्याही से लिखूं उतना जितना हुनर होगा,
पर अक्सर सोचती हूं...
जालों और उलझनों के बीच ठहर जाए तो क्या होगा।

One Chapter Closes, A Million Doors Open
34th Convocation Ceremony

Startups, Stories, and Success-
Startups Success Colloquium at USM

Find your Balance, Inside and out!
University Organizes Yoga Camp

A Tapestry of Creativity!
Department of Fine Arts collaborates with Punjab Kala Academy.

Spin the Tale, Tap the Tune!
A Kathak maestro graced IMC&MT, KUK.

Democracy with Dialogue.
KUK organizes 17th National Youth Parliament Competition.

One Leadership, One Success
VC Prof. S Sachdeva meets Kurukshetra Lok Sabha (MP) Sh. Naveen Jindal for National Youth Parliament Competition.

"Chasing Engineering Dreams!
TechfusionX workshop at UIET.

Oops! Chalks got swapped by colors.
Holi celebratiovns in university campus.

The fire of Freedom Revolution never fades-
remembering Shaheed Bhagat Singh.

Signed and Set for TechfusionX,
VC Prof. Somnath Sachdeva approves!

Soulful symphony from across the globe.
Baridhi's Ensemble plays at IMC&MT

Pride. Passion. KUK

Krishan Bedi promotes the national workshop
on 'One Nation, One Election'.

"Champions wear gold"
North Zone Inter University Women Basketball Championship.

Don't wait for a Hero- Be your own
Self Defense Workshop

Learning the language of justice.
Justice Sandeep Moudgil at Institute of Law

Editor: Dr (Prof.) Maha Singh Poonia , Director, INSTITUTE OF MASS COMMUNICATION AND MEDIA TECHNOLOGY, Kurkshetra University, Kurkshetra, Editorial Committee Team, Dr Abhinav Kataria, Asst. Prof. , Dr Tapesh Kiran, Asst. Prof., Dr Pardeep Rai Asst. Prof. , Mr Rahul Arora Asst. Prof. , Graphic Designing Team Head: Mr Rahul Arora Asst. Prof., Mr Nitin Chawla Asst. Prof. IMC&MT, Students: Prashant, Vasu Vaidansh, Pranshu, Paarth, Vaishnavi, Diya, Riya, Nitish, Mohit, Monu, Shipra, Published By The Registrar, Kurkshetra University, Kurkshetra— e-mail id-Newsletter@kuk.ac.in